# Hie Gazette of India

ध्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I--- खण्ड 1

PART I-Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित



## PUBLISHED BY AUTHORITY

मं ० 291]

नई दिल्ली, मंगलवार, विसम्बर 26, 1972/पीय 5, 1894

No. 201]

NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 26 1972/PAUSA 5, 1894

इस भाग में भिन्न बुध्व संख्या थी जाती है जिसमें कि यह चलग संकलन के रूप में रखा जा सह ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

### MINISTRY OF HOME AFFAIRS

### NOTIFICATION

New Delhi, the 26th December 1972

No. 3/16/72-Pub. II.—The death of Shri Chakravatti Rajagopalachari at 5. P.M. on the 25th December, 1972 has removed from our midst a statesman, profound thinker and a great patriot. As a close associate of Mahatma Gandi as an indefatigable freedom fighter, as Chief Minister of Madras, as Govern of West Bengal, as Home Minister of India and as the first Indian to hold to office of Governor-General of India, Shri Rajagopalachari left an indelik impress of quality and distinction on our contemporary life

Shri Rajagopalachari, popularly known as 'Rajaji' or "C.R.", was born 1878 in the Salem district of Madras. He was educated at the Central Collegangalore and the Presidency College and Law College, Madras. He joined to Bar in 1900 and practised at Salem till 1919. His association with the freedo movement began in 1906. Fired with the urge to serve the country modevotedly, he gave up the law practice and joined Mahatma Gandhi's Satyagral campaign in 1919 and the Freedom Movement in 1920.

Shri Rajagopalachari was the General Secretary of the Indian National Congress from 1921 to 1922 and a member of its Working Committee from 1922 to 1942 and again in 1946-47 and 1951-54. Between 1921—42, he was imprisoned five times for participation in the freedom movement. In April, 1942, he resigned from the Congress on account of difference of opinion. He was Secretary of the Prohibition League of India in 1930 and Premier of Madras during 1937—39. He was also Vice-President of Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha for some time. He assisted Mahatma Gandhi in his talks with Mr. Jinnah in 1944 and was a Member of the Interim Government, 1946-47 and Governor of West Bengal, August, 1947—June, 1948.

An older statesman and a great patriot, Rajaji acted as Governor-General of India in November, 1947 and had the unique distinction of being the first Indian Governor-General from June, 1948 to January, 1950. His elevation to the highest office of the country was a recognition by a grateful Nation of his distinguished services to the country and a tribute to his outstanding capabilities. He was Minister without portfolio in the Union Cabinet, July-December, 1950, Minister of Home Affairs, 1950-51 and Chief Minister of Madras, 1952-54. In 1954, he was awarded the highest honour of the land the BHARAT RATNA for his great services to the nation.

A strong believer in pacifism and an uncompromising critic of the nuclear weapons, Rajaji carried on an incersant campaign against the use of atom bombs and was the spokesman of the Three-man Indian delegation from the Gandhi Peace Foundation to canvass support for the prohibition of nuclear tests. His voice against the nuclear weapons was only an outward manifestation of a mind and a heart imbued with spiritual and moral values and boundless love for humanity. Basic values of religion formed the sheet anchor of his life. He wrote a number of books, all of which have profound moral significance to the conflicttorn world. He was convinced that civilization based on materialism was self-destructive. The cultivation of moral values alone could provide a durable foundation to civilization.

While Rajaji's books Marcus Aurelius and Socrates, the Vedanta, the Bhagvad Gita and the Upnishads, Voice of the Uninvolved, Kambaramavanam-Ayodhya Kandam are profound, his Mahabharata and Ramayana are full of beauty and exquisiteness. His book Hinduim—Doctrine and Way of Life, is an elaboration of his Vedanta and is of special interest to scholars and statesmen of all countries. The crises of the contemporary world can be overcome only by a more constructive examination and appreciation of the moral and philosophical background of the faiths and practices that have hitherto kept civilization moving towards progress instead of self-destruction. The central theme of this book should encourage all those who are fighting the battle for a civilization governed by Moral Order. He edited Gandhij's Young India during the latter's imprisonment and was the principal contributor to the Swarajva Weekly. As an accomplished dialectician, he always had a formula to offer for the most difficult and intricate problems. Paying tribute to C.R. in his Autobiography Pandit Jawaharlal Nehru wrote: "His brilliant intelect, selfless character and penetrating powers of analysis have been tremendous asset to our cause".

GOVIND NARAIN, Secy.

# **गृ**ह् मंत्रालय श्रधिमुचना

नई दिल्ली, 26 दिसम्बर, 1972

संख्या 3/16/72-पत्र II. ---श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के 25 विसम्बर, 1972 को सांय 5.44 पर देहावसान के साथ हमारे बीच से एक राजनेता, एक गहन विचारक, श्रीर एक महान देणभक्त उठ गया है। महात्मा गांधी के निकटतम सहयोगी, स्वातन्त्रय युद्ध के श्रथक सेनानी, मद्रास के मुख्य मंत्री, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, भारत के गृह मंत्री श्रीर भारत के गवर्नर जनरल का पद संभालने वाले प्रथम भारतीय के रूप में श्री राजगोपालाचारी ने हमारे समसामयिक जीवन पर गुण श्रीर विशिष्टता की श्रमिट छाप छोडी है।

"राजाजी" या "सी० भार०" के नाम से प्रख्यात श्री राजगोपालाचारी का जन्म मद्रास के मेलम जिलें में 1878 में हुआ था और उन्होंने बंगलौर के मेन्द्रल कालेज और मद्रास के प्रेजीडेसी कालेज तथा ला कालेज में शिक्षा पायी। उन्होंने 1900 से 1919 तक सेलम में वकालत की। स्वतन्त्रता भान्योलन से उनका सम्बन्ध 1906 में आरम्भ हुआ। देश सेवा का कार्य और अधिक एंकाप्रता के साथ करने की भावना से प्रेरित हो कर उन्होंने वकालत छोड़ दी और 1919 में महारमा गांधी के सरवाग्रह श्रियान मे और 1920 में स्वतन्त्रता भ्रान्दोलन में शामिल हो गये।

श्री राजगोपालाचारी 1921 से 1922 तक इंडियन नेशनल काग्रेस के महासचिव रहें श्रीर 1922 से 1942 तक भीर फिर 1946 से 1947 श्रीर 1951 से 1954 तक कांग्रेस की कार्यसमिति के सदस्य रहे। 1921 से 1942 के बीच स्वतन्त्रता श्रान्दोलन में भाग लेने के सिल-सिले में उन्हें पांचबार जेल जाना पड़ा। 1942 में मतभेद के कारण उन्होंने काग्रेस में त्यागपल दे दिया। वे 1930 में भारतीय नणावन्दी लीग (प्रोहिबिशन लीग श्राफ इंडिया) के मचिव रहें भीर 1937—39 में मद्रास के मुख्य मत्री रहे। वे कुछ समय तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष भी रहे। उन्होंने 1944 में श्री जिल्ला के साथ वार्ता में महान्मा गांधी की सहायता की। वे 1946—47 में श्रातरिम सरकार के सदस्य तथा ग्रगस्त, 1947 से जून 1948 तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे।

विष्ठ राजनेता और महान् वेशमक्त राजा जी ने नवस्वर, 1947 में भारत के गयनेंर जनरल के पद पर स्थानापन रूप में कार्य किया तथा जून, 1948 में जनवरी, 1950 तक प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल रहने का ध्रवूर्व गौरव प्राप्त किया। देश के सर्वोच्च पद पर उनकी ममुन्ति, एक कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा उनकी विशिष्ट देश मेवाश्रो की मान्यता श्रीर उनकी महान् क्षमताश्रो का श्रीभनन्दन ही थी। जुलाई—दिसम्बर, 1950 में वे केन्द्रीय मिल्लमडल में बिना विभाग के मली, 1950—51 में गृह मली, श्रीर 1952—54 में मलाम के मुख्य मली रहें। उन्हें 1954 में उनकी महान राष्ट्र सेवाश्रो के लिये देश का सर्वोच्च सम्मान "भारत रहने" प्रदान किया गया।

णान्तिवादिता में प्रबल निष्ठाणील और परमाणु श्रम्लो के विस्फोट के अथक आलोचक राजाजी ने परमाणु बमों के विरुद्ध निरन्तर प्रभियान जारी रखा। वे परमाणु परीक्षणो पर प्रति-बन्ध के लिये जनमत तैयार करने के विषयकंग iधी शान्ति प्रतिष्ठान के विसदस्यीय भाग्तीय प्रति निष्ठि मङ्गल के प्रवक्ता थे। परमाणु-प्रस्त्तों के विरुद्ध उन की आवाज, श्राध्यान्मिक और नैतिक मुत्यों से अनुप्राणित और मानवता के प्रति श्रमीम प्रेम से भरे उनके मस्तिष्क और दृदय की बाह्य ग्रभिट्यिकत ही थी। धर्म के श्राधारभूत मृत्य उनके जीवन का मूलाधार थे। उन्होंने श्रनेका नेक पुस्तके लिखी जिन सभी में संधर्ष निरत संसार के लिये एक गम्भीर नैतिक विणिष्टता निहिन्द है। उनका यह दृढ़ मत था कि भौतिकवाद पर श्राधृत सम्यता स्वय-क्षयणील है। उनकी मान्यत थी कि केवल नैतिक मूल्या का संवर्धन ही सभ्यता को एक चिरस्थायी आधार प्रदान कर सकता

राजाजी की मार्क्स ग्रारेलियम भीर मुकरात, बेदान्त, भगवद्गीता तथा उपनिषद् वायस ग्रा ग्रन्थन्वोक्टड, कम्बरामायणम्-ग्रयोध्याकाण्डम् नामक पुस्तके विद्धनापूर्ण है ग्रीर उनकी महाभार तथा रामायण मोदर्य श्रीर सबेदना ने परिपूर्ण है। ''हिन्दूइज्म-डोक्ट्रिन ए॰ड व श्राफ लाइफ नामक पुस्तक उनके वेदान्त का ही प्रस्तार है श्रीर सभी देशों के विद्धानों भीर राजनेताओं को विशे रूप ने ब्राहिण्ट करती है। ब्राज के संसार की समस्याओं पर तभी विजय पायी जा सकती है जब कि उन निः । ब्रोर परम्पराधों की नैतिक ब्रीर वार्णनिक पृष्ठभूमि की ब्रधिक रचनात्मक परीक्षा और मग्रहना की जाय, जिन्होंने ब्राज तक सभ्यता को ब्रात्मवात के बजाय प्रगति की क्रोर भग्रसर रखा है। इस पुस्तक का मृख्य प्रतिपाद्य उन लोगों का उत्साह बढ़ायेगा जो नैतिक नियमों से बासित सभ्यता के लिये संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने गांधी जी की जेल याता के दौरान उनके, 'यंग इडिया' का सम्पादन किया और वे 'स्वराज्य सांप्ताहिक'' के ब्रान्यतम लेखकों में से थे। वे कुशल विश्वलेषक थे ब्रौर इसलिये कठिनतम और जटिलतम समस्याओं के इल के बास्ते उनके पास सदा ही कोई न कोई सूत्र मौजूद रहता था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ब्रपनी ब्रात्मकथा में सी ब्रायर को भाषाजल भेंट करने हुये लिखा था: ''उनकी प्रचण्ड प्रतिभा, नि स्वार्थ चरिन्न, और विश्लेषण की पारणामी गक्तियां हमारे पक्ष की महान निश्चियां गही हैं।''

गोविन्द नारायण, सचिव ।